AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-7951

केस अध्ययन अनुसंधान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 शाईस्ता बेगम
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मोनाड यूनिवर्सिटी, हापुड़ राजेस्थान

सारांश

केस स्टडी एक महत्वपूर्ण विधि है जिसका उपयोग किसी सामाजिक इकाई के गहन और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए गुणात्मक डेटा के संग्रह के लिए किया जाता है। यह सामाजिक इकाई एक व्यक्ति,एक परिवार, एक समुदाय, एक समूह या यहां तक की एक संपूर्ण समाज भी हो सकता है। केस स्टडी केस हिस्ट्री से काफी अलग है जो व्यक्तिगत जानकारी के रिकॉर्डिंग पर केंद्रित है। केस स्टडी के विभिन्न तरीके जैसे व्यक्ति, समुदाय, सामाजिक समूह, संगठन और घटनाओं का उपयोग उचित तकनीकों (अवलोकन, साक्षात्कार, दस्तावेज और रिकॉर्ड जैसे द्वितीयक डेटा) का उपयोग करके शोध समस्या के उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। केस स्टडी में डेटा के मुख्य स्रोतों में जीवन इतिहास, व्यक्तिगत दस्तावेज, पत्र और रिकॉर्ड, आत्मकथाएं, साक्षात्कार और अवलोकन के माध्यम से प्राप्त जानकारी शामिल है। केस स्टडी स्थापित सिद्धांत का खंडन करने वाली सामाजिक इकाई के गहन अध्ययन और गहन विश्लेषण की सुविधा प्रदान करती है। यह स्थापित सिद्धांत का खंडन करने और नए शोध को प्रेरित करने में मदद करता है। हालांकि केस अध्ययन में कई कारणों से कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं, जिनमें डेटा में असंगति, निष्कर्षों को दोहराना संभव नहीं होना, महत्वपूर्ण और सही सूचनादाताओं का साक्षात्कार, अन्वेषक की विशेषज्ञता, अध्ययन किया जा रहे सैद्धांतिक मुद्दों और एकत्रित आंकड़ों के बीच बातचीत की निरंतर निगरानी, तथा डेटा की व्याख्या पर सावधानी पूर्वक विचार करने की आवश्यकता शामिल है। अध्ययन शोध एक गुणात्मक पढ़ती है जो वास्तविक जीवन के संदर्भों में जटिल घटनाओं की खोज करती है। यह व्यक्तिगत, संगठनात्मक, सामाजिक या राजनीतिक घटनाओं की बारीकियां और गतिशीलता को समझने में विशेष रूप से मूल्यवान है। एक एकल मामले या कुछ मामलों पर ध्यान केंद्रित करके, यह दृष्टिकोण एक गहन, समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे शोधकर्ताओं को विस्तृत संदर्भित अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। यह पद्धति अक्सर साक्षात्कार, अवलोकन, दस्तावेज और कलाकृतियों सहित कई डेटा स्रोतों का उपयोग करती है, जिन्हें निष्कर्षों की वैधता और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए त्रिकोणित किया जाता है। केस स्टडी अनुसंधान

लचीला और अनुकूलनीय है, जिससे यह अन्वेषणात्मक, व्याख्यात्मक और वर्णनात्मक उद्देश्यों के लिए उपयुक्त है। यह सामाजिक विज्ञान, व्यवसाय, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है जहां जटिल मुद्दों की व्यापक समझ की आवश्यकता होती है।

मुख्य बिंदु:- गुणात्मक डेटा, अवलोकन, साक्षात्कार, दस्तावेज और रिकॉर्ड जैसे द्वितीयक डेटा, सैद्धांतिक मुद्दे आदि।

केस स्टडी/ वैयक्तिक अध्ययन: केस स्टडी विधि शोधकर्ता को स्थिति के मानस का गहनता से अध्ययन करने की अनुमति देता है। जिस अध्ययन पद्धति में किसी व्यक्ति या समुदाय का पूर्ण रूप से अध्ययन किया जाता है, उसे व्यक्तिक अध्ययन पद्धति कहते हैं। इस अध्ययन पद्धति की सफलता तभी संभव है, जब व्यक्ति या समुदाय की विभिन्न सूचनाएं प्राप्त हो। सूचना प्राप्ति में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत आते हैं। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत शोधकर्ता साक्षात्कार व अवलोकन का सहयोग लेता है। इसी प्रकार द्वितीय स्रोतों में आत्मकथा, पत्र आदि से सूचना प्राप्त होती हैं। शोधकर्ता उन व्यक्तियों या घटनाओं की स्थिति का अध्ययन करता है जो मानव मन की नवीन या कम खोज की गई घटनाओं के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करते हैं। स्थिति की संख्या एक या इससे अधिक हो सकती है, या वे विभिन्न या समान विशेषताओं के हो सकते हैं, उदाहरण के लिए एक मानसिक विकार से पीड़ित रोगी, एक ही लिंग, वर्ग या जातीयता से संबंधित व्यक्तियों का समूह, तथा लोगों पर विभिन्न प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं जैसे बाढ़, सुनामी, आतंकवाद तथा औद्योगीकरण का प्रभाव हो सकता है। स्थिति अध्ययन में बहु-विधि उपागम शामिल होता है क्योंकि इसमें विषयों के बारे में विस्तृत सूचना प्राप्त करने के लिए असंरचित साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा अवलोकन जैसे विभिन्न अन्य शोध विधियों का उपयोग किया जाता है।

पी. वी. यंग के अनुसार, "वैयक्तिक अध्ययन किसी एक सामाजिक इकाई के जीवन की खोज और विश्लेषण की पद्धति है, चाहे यह इकाई एक व्यक्ति, परिवार संस्था व संपूर्ण समुदाय की क्यों न हो।"

वीसंजेंज एवं वीसंजेंज के अनुसार, "वैयक्तिक अध्ययन एक गुणात्मक विवेचना का रूप है जिसमें किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा संस्था का अत्यंत सावधानी सहित पूर्ण निरीक्षण किया जाता है।" सामाजिक संस्थानों के केस स्टडी में कई वैयक्तिक इकाइयों यथा-सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक संगठन, परिवार, वर्ग अथवा विकासात्मक कार्यक्रम का अध्ययन शामिल हो सकता है। समुदायों के केस स्टडी में किसी जनजाति, झुग्गी-झोपड़ी, गाँव के क्षेत्र अथवा संस्कृति को शोध की इकाई माना जा सकता है।

केस स्टडी के कुछ लाभ इस प्रकार हैं-

1) एक व्यक्ति, समूह या घटना की गहन जाँच की अनुमति देता है।

2) एक स्थिति की सूचना को दूसरों के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है।

3) शोधकर्ताओं को प्रयोग के माध्यम से कुछ असंभव की जांच करने देता है।

सामान्यतः ऐसा विषय जो असाधारण प्रकार का होता है, शोधकर्ता उसका अध्ययन करने के लिए श्केस स्टडी विधि का प्रयोग करता है। चूंकि इन विषयों के अध्ययन के समय सामाजिक सम्बन्धों व सामाजिक शक्तियों के विषय में अनेक तथ्य सीखने को मिलते है, जो सामाजिक मानदंडों से भिन्न होते हैं, अतः शोधकर्ता इस विधि का प्रयोग शोध कार्य में करता है। इस विधि के माध्यम से शोधकर्ता प्रायः अपने अवलोकन द्वारा, सामाजिक मानदंडों की वैधता प्रमाणित करने हेतु या ग्राउंडेड सिद्धान्त पद्धति के प्रयोग द्वारा नवीन सिद्धान्तों के निर्माण में समर्थ होता है। 19 वीं शताब्दी में सामाजिक विज्ञान का पहला केस स्टडी फ्रांस के समाजशास्त्री तथा अर्थशास्त्री पियरे गुइल्यूम फ्रेडरिक प्ले जिन्होंने परिवार बजट का अध्ययन किया उनके द्वारा किया गया ऐसा माना जाता है। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मनोविज्ञान समाजशास्त्र और नृविज्ञान (Anthropology) में इस विधि का प्रयोग किया गया है।

व्यक्तिगत अध्ययन की प्रणाली PROCEDURE OF CASE STUDY-व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में व्यक्ति या संस्था का उसकी सम्पूर्णता में अध्ययन किया जाता है। इसी पर इस पद्धति का अस्तित्व टिका हुआ है। सम्पूर्णता का अर्थ है-विभिन्न दृष्टिकोणों से घटना का सर्वांगीण अध्ययन। इस अध्ययन के लिए निम्न प्रणाली को प्रयोग में लाया जाता है-

(1) समस्या का विवेचन- इस अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि पहले समस्या को स्पष्ट रूप से प्रभावित किया जाए और उसके विभिन्न पहलुओं की स्पष्ट व्याख्या कर ली जाए। समस्या का विवेचन निम्न तत्वों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए-

(अ) विषय का चुनाव- किसी भी समस्या पर प्रकाश डालने के लिए ऐसे विषय का चुनाव करना चाहिए, जो समस्या का सही प्रतिनिधित्व कर सके और उस पर जो विषय चुना जाता है, वह निम्न तीन में से किसी भी प्रकार का हो सकता है- (i) विशेष, (ii) साधारण, और (iii) असाधारण।

(आ) इकाइयों के प्रकार- विषय के चुनाव करने के बाद इकाइयों के प्रकारों की व्याख्या करनी चाहिए। जिन इकाइयों से व्यक्ति या संस्थाओं का अध्ययन किया जा रहा है, उनके कितने प्रकार है?

(इ) इकाइयों की संख्या- इकाइयों के प्रकारों का निश्चय करने के बाद इकाइयों की संख्या निश्चित करनी चाहिए। इकाइयों की संख्या इतनी होनी चाहिए जिससे समस्या पर प्रभाव पड़े।

(ई) विश्लेषण की सम्पूर्णता-इसके बाद समस्या के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है। जिसमें अध्ययन के क्षेत्र का निर्धारण किया जाता है, जिससे समस्या का समाधान किया जाता है।

(2) घटनाओं का क्रम- विषय का चुनाव करने के बाद समस्या से सम्बन्धित घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा घटनाओं में जो उतार और चढ़ाव होते हैं, उनके क्रम का विश्लेषण किया जाता है।

(3) निर्धारक कारकों का विश्लेषण- यह व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति का तीसरा चरण है। इसके द्वारा उन कारकों का पता लगाया जाता है, जो वर्तमान समस्या या घटना के लिए उत्तरदायी होते हैं। सामाजिक घटना को निर्धारित करने वाले कारक दो प्रकार के होते हैं-

(अ) मौलिक कारक जो घटना या व्यवहार को संचालित करने में मुख्य भूमिका अदा करते हैं।

(आ) सहायक कारक जो कारक गौड़ तो होते है, किन्तु मौलिक कारकों को शक्ति प्रदान करते हैं और इस प्रकार घटना में घटित होने में सहायक होते हैं।

(4) विश्लेषण और निष्कर्ष- अन्त में समस्या के सम्बन्ध में जो तथ्य प्राप्त होते हैं, उनके कारकों का विश्लेषण किया जाता है। साथ ही इस घटना के परिणामों की ओर संकेत किया जाता है। विवेचना इस प्रकार की जाती है कि इकाई में सम्पूर्णता के दर्शन होते हैं। साथ ही इकाई के स्वरूप को भी स्पष्ट कर दिया जाता है।

व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति के यन्त्र और विधियाँ (TOOLS AND TECHNIQUES OF CASE & STUDY METHODS)- यह सामाजिक अनुसंधान की वह पद्धति है जिसके माध्यम से अध्ययन विषय के सम्बन्ध में अधिक-से-अधिक जानकारिया प्राप्त की जाती है। मौलिक प्रश्न यह है कि अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की कौन-सी विधियां है और किन यन्त्रों के माध्यम से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है? व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में जिन यन्त्रों और विधियों का प्रयोग किया जाता है, वे अग्र हैं-

(1) दैनन्दिनी (Diary)-व्यक्तिगत अध्ययन में डायरी या दैनन्दिनी का अत्यधिक महत्व होता है। दैनन्दिनी के माध्यम से व्यक्ति के दैनिक कार्यकलाप और उसके अन्तः मन की भावनाओं को समझने में सहायता मिलती है। इसके माध्यम से व्यक्ति गुप्त क्रियाओं, इच्छाओं, सफलताओं और

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 *E-ISSN: 3048-7951*

असफलताओं आदि का बोध होता है। ये सभी बातें सिर्फ डायरी में ही लिखी जा सकती हैं। इसलिए व्यक्तिगत अध्ययन में डायरी का महत्व सबसे अधिक है।

(2) पत्र (Letters)- पत्रों के माध्यम से हमें निम्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलती है- (अ) दूसरे व्यक्तियों से सम्बन्धों का ज्ञान, (आ) व्यक्ति का जीवन दर्शन, (इ) व्यक्ति की भावनाएँ तथा धारणाएँ, (ई) व्यक्ति का जीवन के प्रति दृष्टिकोण, (उ) मित्रता, वैमनस्य, सयोग-वियोग आदि घटनाओं का ज्ञान।

इस प्रकार पत्रों के माध्यम से व्यक्ति की विशेष मनोवैज्ञानिक दशाओं का अध्ययन आसानी से किया जा सकता है।

(3) प्रलेख (Documents)-पत्रों और डायरी के अतिरिक्त व्यक्तिगत अध्ययन में प्रलेखों का भी अत्यधिक महत्व है। ये प्रलेख पुस्तक और पत्रिकाओं तथा आप्रकाशित तौर पर प्राप्त किए जाते है। इनके माध्यम से भी जीवन की घटनाओं और अनुभूतियों को जाना जाता है।

(4) संकलित सामग्री (Collected Material)-उपर्युक्त स्रोतों के अतिरिक्त सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा संकलित सामग्री से निम्न जानकारी प्राप्त करनी चाहिए-
(अ) अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति से सम्बन्धित सरकारी कार्यालयों के रिकॉर्ड का अंश, (आ) उस व्यक्ति की वंशावली, (इ) उसके जीवन की घटनाओं की सूची, (ई) स्कूल, पुलिस न्यायालय, जेल आदि से प्राप्त रिकॉर्ड, (उ) उसके प्रमाण-पत्र और प्रशंसा पत्र, (ऊ) अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति की पसन्द की पुस्तक, (ए) उसका फोटो एलबम, (ए) जनगणना के रिकॉर्ड, (ओ) अध्ययन के लिए किए जाने वाले व्यक्ति से साक्षात्कार, (औ) उसके सहपाठियों, मित्रों, सम्बन्धियों तथा परिचितों से साक्षात्कार, (अं) उसके संस्मरण, (अः) अध्ययन किये जाने वाले व्यक्ति की सामाजिक अभिव्यक्ति।

(5) जीवन-इतिहास (Life-History)- इसे जीवनी भी कहा जा सकता है। इसका व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में अत्यंत ही होता है। जीवन इतिहास में सर्वांगीण चित्र उभरकर सामने आते हैं। एक जीवन-इतिहास में निम्नलिखित बातें सम्मिलित रहती है-

(अ) पारिवारिक दशाएँ-जीवन इतिहास में पारिवारिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अन्तर्गत परिवार की संरचना और कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें माता-पिता, भाई-बहन, सम्बन्धी आदि की जानकारी के आधार पर व्यक्ति की क्षमताओं का अध्ययन किया जाता है।

(आ) प्रभावक पारिवारिक घटनाएँ-परिवार की उन महत्वपूर्ण और प्रभावशाली घटनाओं का अध्ययन करना चाहिए, जिन्होंने व्यक्ति के जीवन को प्रभावित और परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।

(इ) अन्य महत्वपूर्ण घटनाएँ-परिवार की प्रभावशाली घटनाओं के अतिरिक्त जीवन की उन घटनाओं का भी अध्ययन किया जाना चाहिए, जो प्रभावपूर्ण हो। इन प्रभावपूर्ण घटनाओं के आधार पर ही व्यक्तित्व की विशेषताओं का वास्तविक ज्ञान होता है।

(ई) व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ-व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं। प्रत्येक परिस्थिति के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया होती है। जीवन इतिहास में इन प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण आवश्यक है।

(उ) परिस्थिति-परिवर्तन का व्यक्ति पर प्रभाव- परिस्थितियों में निरन्तर परिवर्तन होता है और इनका प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर पड़ता है। अतः परिस्थितियों में परिवर्तन के प्रभाव का भी अध्ययन किया जाना चाहिए।

(ऊ) महत्वपूर्ण व्यक्ति-कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित होता है, जो जीवन की धारा को ही मोड़ देते हैं। इसलिए जीवन-इतिहास के उन व्यक्तियों को भी महत्व प्रदान किया जाना चाहिए, जिन्होंने जीवन की धारा को मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

(ए) भविष्य के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण -इतिहास में व्यक्ति के विचार, भावनाएँ, भविष्य के प्रति दृष्टिकोण और उनकी आशाएँ आदि को भी सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार जीवन-इतिहास व्यक्ति का इतिहास, है, जिसमें जीवन की सभी घटनाओं को व्यक्ति अपने दृष्टिकोण के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। साथ ही साथ इस इतिहास का विश्लेषण और व्याख्या की जाती है और इस प्रकार सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में सामान्य नियमों का निर्माण किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन में सूचनाओं के स्त्रोत (SOURCES OF INFORMATIONS IN CASE STUDY)- वैयक्तिक अध्ययन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता का सदैव यह प्रयास रहता है कि किसी-न-किसी ढंग अध्या स्रोत से अध्ययन की जाने वाली इकाई के बारे में अधिक से अधिक तथ्य प्राप्त किए जाएँ। स्वाभाविक है कि इस पद्धति के अन्तर्गत सूचनाओं के स्रोत अत्यधिक विविधतापूर्ण और विस्तृत होते हैं। अनेक वैयक्तिक अध्ययनों में इतने अधिक स्त्रोतों और प्रविधियों का उपयोग किया गया है कि उनसे इस पद्धति की बहुमुखी प्रकृति को सरलता से समझा जा सकता है। नेल्स एण्डरसन ने होबो लोगों के आन्तरिक जीवन का अध्ययन करने के लिए सबसे पहले समूह में गाए जाने वाले लोक गीतों,

गाथाओं तथा उनकी कविताओं के माध्यम से उनकी भावनाओं को समझने का प्रयत्न किया। इसके पश्चात् उसने होबो लोगों के जीवन के बारे में विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित सांख्यिकीय तथ्य एकत्रित किए। इसके अतिरिक्त, उनकी वंशावलियों, फोटो तथा निकटवर्ती व्यक्तियों से भी अनेक प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित की। इन सभी प्रयत्नों की सहायता से एण्डरसन ने होबो लोगों के जीवन की आन्तरिक विशेषताओं तथा उनके सामाजिक संगठन को बनाए रखने वाले व्यावहारिक नियमों को ज्ञात करने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वैयक्तिक अध्ययन के स्त्रोत प्राथमिक भी हो सकते हैं और द्वितीयक भी। इन सभी स्रोतों को संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है-

(1) प्राथमिक स्त्रोत-वैयक्तिक अध्ययन में अध्ययनकर्ता को अध्ययन इकाई से सम्बन्धित अनेक तथ्यों का संग्रह प्राथमिक सूचनाओं के रूप में करना आवश्यक होता है। इसके लिए अध्ययनकर्ता व्यक्तिगत आधार पर अवलोकन तथा साक्षात्कार के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनेक सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। अनेक दूसरे तथ्य प्राप्त करने अथवा प्राप्त तथ्यों का सत्यापन करने के लिए उसे अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति के मित्रों, उसके पड़ोसियों, परिवार के सदस्यों तथा अन्य सम्बन्धियों से भी सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक होता है। प्राथमिक स्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए निम्न प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है- प्रत्यक्ष स्रोत तथा अप्रत्यक्ष स्रोत।

1. प्रत्यक्ष स्त्रोत-जैसा कि नाम से स्पष्ट है, तथ्य-संकलन के प्रत्यक्ष स्त्रोत वे होते हैं जिनके अन्तर्गत अनुसन्धानकर्ता या तो स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर अवलोकन के द्वारा सामग्री को एकत्रित करता है अथवा सूचनादाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करके उपयोगी सूचनाओं का संग्रह करता है। इस कार्य के लिए एक अध्ययनकर्ता जिन अनेक प्रविधियों के उपयोग द्वारा तथ्यों का संकलन करता है, उन्हें हम सामग्री संकलन का प्रत्यक्ष स्त्रोत कहते हैं। इनमें से प्रमुख स्त्रोतों तथा उनकी प्रकृति को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है-

(क) अवलोकन वह प्रविधि है जिसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता विषय से सम्बन्धित क्षेत्र में जाकर स्वयं ही विभिन्न घटनाओं और दशाओं को पक्षपातरहित रूप से देखता है और इत्त प्रकार महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन करता है। यह प्रविधि उसी दशा में अधिक उपयोगी होती है जब अध्ययन का क्षेत्र सीमित हो तथा अध्ययन किया जाने वाला विषय लोगों की मनोवृत्तियों से सम्बन्धित न हो।

(ख) अनुसूची अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों की एक ऐसी सूची है जिसे लेकर अध्ययनकर्ता स्वयं उत्तरदाताओं से मिलता है और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर स्वयं ही उस सूची में अंकित कर लेता है।

(ग) साक्षात्कार-प्राथमिक तथ्यों को संकलित करने में साक्षात्कार एक प्रत्यक्ष स्रोत है। इसके अन्तर्गत अनुसन्धानकर्ता अध्ययन विषय से सम्बन्धित व्यक्तियों से मिलकर अध्ययन के विभिन्न पक्षों पर उनसे स्पष्ट वार्तालाप करता है। यही वार्तालाप सामग्री संकलन का स्रोत होता है। अनेक सामाजिक घटनाएँ इतनी जटिल होती है कि केवल अनुसूची से सम्बन्धित प्रश्नों की सहायता से ही उन्हें ज्ञात नहीं किया जा सकता। इन्हें समुचित रूप से समझने के लिए सम्बन्धित व्यक्तियों से विस्तार से बातचीत करना आवश्यक होता है। साक्षात्कार के अन्तर्गत प्रश्नों अथवा वार्तालाप के विभिन्न पक्षों का कोई निश्चित क्रम होना आवश्यक नहीं होता। इसके फलस्वरूप उत्तरदाताओं के कथन की बीच-बीच में इस प्रकार परीक्षा भी होती रहती है कि संकलित सामग्री का सत्यापन किया जा सके।

2. अप्रत्यक्ष स्त्रोत-प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए कभी-कभी अध्ययनकर्ता ऐसे स्रोतों का भी उपयोग करता है जिनकी सहायता से अध्ययन क्षेत्र में जाए बिना अथवा उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क के बिना ही सामग्री का संकलन किया जा सके। ऐसे स्रोतों को हम प्राथमिक सामग्री एकत्रित करने के अप्रत्यक्ष स्स्रोत कहते हैं। पार्टेन ने ऐसे स्रोतों के अन्तर्गत रेडियो अपील, टेलीफोन द्वारा साक्षात्कार तथा प्रतिनिधि प्रविधियों को विशेष महत्व प्रदान किया है। वास्तव में, सामग्री संकलित करने के अप्रत्यक्ष प्राथमिक स्रोतों में चार स्त्रोत प्रमुख हैं जो निम्न प्रकार है-(क) प्रश्नावली (ख) रेडियो अथवा टेलीविजन अपील (ग) टेलीफोन साक्षात्कार (घ) प्रतिनिधि प्रविधियाँ

वास्तविकता यह है कि सामग्री संकलन के अप्रत्यक्ष प्राथमिक स्रोत केवल उन्हीं समाजों में अधिक उपयोगी हो सके हैं जो भौतिक क्षेत्र में बहुत विकसित हैं। भारत जैसे देश में आज भी प्राथमिक सामग्री के संकलन के लिए प्रत्यक्ष स्रोत ही अधिक उपयुक्त हैं। वास्तव में, तथ्य-संकलन के प्रत्यक्ष स्त्रोत केवल उपयोगी सामग्री ही प्रदान नहीं करते बल्कि अध्ययनकर्ता की पक्षपातपूर्ण मनोवृत्ति पर नियन्त्रण लगाए रखने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। इस आधार पर भी प्राथमिक सामग्री को संकलित करने के लिए अप्रत्यक्ष स्रोतों की अपेक्षा प्रत्यक्ष स्रोतों को ही अधिक उपयुक्त समझा जाता है। द्वितीयक स्त्रोत-प्राथमिक स्रोतों के अतिरिक्त वैयक्तिक अध्ययन के अन्तर्गत सूचनाओं के संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोत भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ये द्वितीयक स्त्रोत साधारणतया अनेक प्रकार के वैयक्तिक प्रलेखों के रूप में होते हैं। वैयक्तिक प्रलेख की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए आल्पोर्ट ने लिखा है कि "वैयक्तिक प्रलेख स्वयं प्रकाशित किए गए ऐसे प्रलेख होते हैं जो इच्छित अथवा अनिच्छित रूप से लेखक की मानसिक विशेषताओं तथा कार्यप्रणाली के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करते हैं।

" जहोदा तथा अन्य ने व्यक्तिगत प्रलेखों के अन्तर्गत तीन प्रकार के प्रलेखों का समावेश किया है- (क) लिखित प्रलेख, (ख) ऐसे प्रलेख जो लेखक के निर्देशन में लिखे गए हों तथा (ग) वे प्रलेख जो किसी व्यक्ति के वैयक्तिक अनुभवों पर प्रकाश डालते हों। वास्तव में, वैयक्तिक अध्ययन के लिए वैयक्तिक प्रलेख सूचनाओं के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। उदाहरण के लिए, डायरियाँ, पत्र, जीवन-इतिहास, लेख, वंशावली, जीवन-गाथा तथा विभिन्न संगठनों द्वारा सुरक्षित रखे जाने वाले अभिलेख आदि कुछ प्रमुख द्वितीयक स्रोत हैं जिनके माध्यम से किसी सामाजिक इकाई के बारे में महत्वपूर्ण व्यक्तिगत सूचनाएँ ज्ञात की जा सकती हैं।

वैयक्तिक अध्ययन की मूलभूत मान्यताएँ (BASIC ASSUMPTIONS IN CASE STUDY)-वैयक्तिक अध्ययन प्रविधि का प्रयोग केवल विशेष प्रकार के अध्ययनों के लिए ही किया जा सकता है। यह कुछ मूलभूत मान्यताओं पर आधारित है जिसके कारण इसका प्रयोग सभी परिस्थितियों में नहीं किया जा सकता है। वैयक्तिक अध्ययन की मूलभूत या मौलिक मान्यताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) व्यवहार में समानता- वैयक्तिक अध्ययन की सबसे पहली मौलिक मान्यता यह है कि व्यक्तियों की आधारभूत प्रवृत्तियाँ एकसमान होती हैं यद्यपि उनके ऊपरी व्यवहार में कुछ असमानताएँ देखी जा सकती हैं। सामान्यतः मूल प्रवृत्तियाँ तथा प्रेरक शक्तियाँ एक होने के कारण ही व्यक्तियों का विशेष परिस्थितियों में व्यवहार भी एकसमान होता है। यदि ऐसा सम्भव नहीं होता तो एक व्यक्ति या एक इकाई का अध्ययन व्यर्थ होता। इस मान्यता के कारण ही हम कुछ इकाइयों के अध्ययन के आधार पर सामान्य व्यवहार को समझ सकते हैं।

(2) सामाजिक घटनाओं में जटिलता-वैयक्तिक अध्ययन के प्रयोग में दूसरी मुख्य मान्यता यह है कि सामाजिक घटनाएँ एवं मानव-व्यवहार जटिल है। मानव-व्यवहार में अनेक ऐसे अदृश्य एवं अमूर्त तथ्य विद्यमान रहते हैं जिनका अवलोकन नहीं किया जा सकता। अतः इन जटिल घटनाओं एवं व्यवहार को समझने के लिए किसी इकाई का अन्य इकाइयों के सन्दर्भ में गहराई से अध्ययन किया जाना अनिवार्य है।

(3) समय का प्रभाव-वैयक्तिक अध्ययन के प्रयोग की तीसरी मौलिक मान्यता यह है कि सामाजिक घटनाएँ तथा व्यवहार समय के अनुसार प्रभावित होते रहते हैं। अतः जिस इकाई का हम आज अध्ययन कर रहे हैं उसे प्रभावित करने वाली भूतकालीन परिस्थितियों को तथा उनके प्रभावों को भी समझना जरूरी है। एक समय पर किया गया अध्ययन इकाई को गहराई एवं पूरी तरह से समझने में सहायक नहीं हो सकता है।

(4) परिस्थितियों की पुनरावृत्ति-यद्यपि समय के प्रभाव के कारण दशाओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होता रहता है, फिर भी कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हैं जोकि बार-बार लगभग एक से रूप में घटित होती रहती हैं। इकाई का पूर्ण अध्ययन ही इस प्रकार की परिस्थितियों में तथा इकाई के व्यवहार में उतार-चढ़ाव के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में सहायता दे सकता है।

(5) इकाई की समग्रता- किसी भी इकाई का अध्ययन उसे खण्डों या भागों में विभाजित करके नहीं किया जा सकता। इसलिए वैयक्तिक अध्ययन की यह मान्यता है कि सामाजिक इकाई का अध्ययन सम्पूर्णता में ही किया जा सकता है। इकाई का समग्र के रूप में अर्थात् बहुमुखी रूप से किया गया अध्ययन ही इसे पूरी तरह से समझने में सहायक है।

एकल अध्ययन के प्रकार (Types of Case Study)-एकल अध्ययन छः प्रकार से किया जाता है इन प्रमुख प्रकारों का विवरण निम्नांकित पंक्तियों में किया गया है-

(1) सामाजिक या सामूहिक एकल अध्ययन-सामाजिक अध्ययन किसी समाज या समुदाय का सावधानीपूर्वक किया गया विश्लेपणात्मक वर्णन है जो किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति में एक साथ रह रहे हैं। कुछ सामाजिक तत्वों का अध्ययन सामुदायिक अध्ययन में किया जाता है जैसे स्थिति, आकार, आर्थिक क्रियाओं की गतिविधियाँ, सामयिकता, जलवायु और अन्य प्राकृतिक स्रोत, ऐतिहासिक प्रजाति, सदस्यों का रहन-सहन, सामाजिक स्वरूप जीवन का उद्देश्य व मूल्य, समाज में निहित उन सामाजिक संस्थाओं का मूल्यांकन जो व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इस प्रकार के अध्ययन वे एकल अध्ययनं होते हैं, जिनमें समुदाय एक स्थिति (एकल) को प्रदर्शित करता है।

(2) कारण का तुलनात्मक अध्ययन-दूसरे प्रकार का अध्ययन कारण प्रभाव सम्बन्ध के विश्लेषण द्वारा समस्याओं के हल खोजने का कार्य करता है। वह कौन-से कारण हैं जो व्यक्ति की घटनाओं को व्यवहार रूप में सम्बन्धित प्रतीत होते हैं? वर्णनात्मक अनुसन्धान की विधियों के द्वारा इन कारणों के पारस्परिक महत्व को भी प्रगट किया जा सकता है। उदाहरण-बाल्यावस्था के अपराधों का अध्ययन की तुलना में अपराधी व निरपराधी बालकों के सामाजिक व शैक्षिक पृष्ठिभूमि में अन्तर कर सकता है। कौन-कौन से तथ्य अपराधी समूह में सामान्य हैं और कौन-कौन निरपराधी समूह में, यह भी अन्तर कर सकता है? एक तथ्य एक समूह के लिए सामान्य है व दूसरे के लिए नहीं, परन्तु यह तथ्य अपराध के कारणों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण व्याख्या दे सकता है।

(3) क्रियात्मक विश्लेषण क्रिया-विश्लेषण या क्रियाओं का विश्लेपण, या वे प्रक्रियायें जो उद्योगों या विभिन्न प्रकार की सामाजिक संस्थाओं में व्यक्ति विशेष महत्वपूर्ण है। समस्त जिम्मेदारी के स्तर पर

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-7951

अथवा किसी भी कार्य क्षेत्र में प्रक्रियाओं का विश्लेषण उचित है। सामाजिक पद्धति में अध्यक्ष, प्रधानाचार्य, अध्यापक और प्रवन्धकर्ताओं के कार्यों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया हो, यह जानने के लिए कि यह व्यक्ति क्या करते हैं? और उन्हें क्या करने में सक्षम होना चाहिए?

(4) पाठ्यवस्तु या अभिलेख विश्लेषण- पाठ्यवस्तु विश्लेषण को कभी-कभी लेख विश्लेषण भी कहा जाता है। यह वर्तमान प्रमाण या लेख के आंकड़ों के स्रोत हैं-विभागीय प्रमाण व वृत्तांत, छपे हुए फार्म, पाठ्य-पुस्तकें, सन्दर्भ पुस्तकें, पत्र, आत्म-कथा, डायरी, तस्वीरें, फिल्में व कार्टून इत्यादि। लेकिन लिखित प्रमाण स्रोतों का प्रयोग करते समय इन तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है कि छपे हुए आंकड़ों का विश्वसनीय होना आवश्यक नहीं है। लिखित प्रमाणों का मूल्यांकन जो व्याख्यात्मक अनुसन्धान में प्रयुक्त हुए हैं। आलोचना उसी प्रकार की होनी चाहिए जोकि लेखकों द्वारा प्रयुक्त हुए है। यह पाठ्यवस्तु या लेख प्रमाण विश्लेषण का अनुसन्धान में महत्वपूर्ण योगदान है। किसी अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण ज्ञान का योगदान अथवा सामाजिक व शैक्षिक परिस्थितियों के सुधार व मूल्यांकन के सन्दर्भ में सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायक होती हैं।

(5) अनुगामी कार्यक्रम- अनुगामी अध्ययन उन व्यक्तियों के विषय में अध्ययन करती है जो विद्यालय में हैं अथवा अपना अध्ययन पूर्ण करने के बाद विद्यालय छोड़ चुके हैं, उनके पाठ्यक्रमों की सफलता के विषय में जानने का प्रयास करती है कि उन पाठ्यक्रमों का उन पर क्या प्रभाव है? उनके स्तर इस प्रकार के अध्ययन से किसी संस्था की क्षमता का अनुमान उसके वास्तविक परिणामों के प्रचार में किया जा सकता है।

(6) अध्ययनों की प्रवृत्तियाँ-व्याख्या विधि का यह एक रोचक प्रयोग है। संक्षिप्त में यह प्रामाणिक आँकड़ों के कालानुक्रमिक निर्धारण पर आधारित है। यह संकेत करते हुए कि अतीत में क्या हो रहा था? तथा वर्तमान परिस्थितियाँ किस ओर इंगित करती है? और इन आंकड़ों से आगे का भविष्य क्या होगा?

वैयक्तिक अध्ययन के यंत्र (Apparatus of Case Study)- प्रत्येक वैज्ञानिक अध्ययन के विधिवत् सम्पन्न होने के लिये कुछ अभीष्ट यंत्रों एवं प्रविधियों को साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाना नितात अनिवार्य होता है। वैयक्तिक इतिहास विधि द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के लिये भी विभिन्न यंत्रों एवं प्रविधियों को इस्तेमाल किया जाता है। विधि की पूर्ण व्याख्या के लिये इन यंत्रों एवं प्रविधियों को भी जानना अनिवार्य है। मुख्य यंत्रों एवं साधनों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

अ. संबंधित व्यक्ति के साथ प्रत्यक्ष साक्षात्कार ।

आ. संबंधित व्यक्ति द्वारा लिखित व्यक्तिगत डायरियां ।

इ. व्यक्ति द्वारा लिखित विभिन्न पत्र।

ई. व्यक्ति द्वारा रचित साहित्यिक कृतियां (यदि हों तो)।

उ. व्यक्ति की मनपसंद तथा प्रिय पुस्तकें।

ऊ. व्यक्ति के संबंधित सरकारी दस्तावेजों के अंश।

ऋ. संबंधित व्यक्ति की पारिवारिक भूमिका एवं विवरण।

ऌ. व्यक्ति की निजी एलबम ।

ऍ. व्यक्ति के निजी मित्रों, प्रेमी प्रमिका तथा अन्य परिचितों से उसके विषय में प्राप्त जानकारी।

ऎ. व्यक्ति के गत जीवन की मुख्य घटनाओं का वृत्तांत एवं जीवन-गाथा।

ए. व्यक्ति के स्कूल, दफ्तर, जेल अथवा पुलिस रिकार्ड से प्राप्त जानकारी एवं सूचना।

ऐ. व्यक्ति को प्राप्त पुरस्कार, प्रमाण-पत्र आदि।

इन सब वृत्तांतों के विवेचन एवं विश्लेषण द्वारा संबंधित व्यक्ति के विषय में विस्तृत एवं सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त किया जाता है तथा उस ज्ञान के आधार पर ही अभीष्ट निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं।

व्यक्तिगत अध्ययन का महत्व (IMPORTANCE OF THE CASE STUDY METHOD)-सामाजिक अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ हैं। इन सबमें व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसका कारण यह है कि इसमें इकाई का सम्पूर्ण अध्ययन किया जाता है और साथ ही सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है। इसी पद्धति के माध्यम से जटिल जीवन के ऐतिहासिक अध्ययन का प्रयास किया जाता है। निम्न कारणों से इस पद्धति का महत्व अन्य पद्धतियों की तुलना में अधिक है-

(1) सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन-इस पद्धति की मौलिक विशेषता यह है कि इसके माध्यम से ही किसी समस्या का सूक्ष्म और गहराई से अध्ययन किया जाता है क्योंकि इसमें प्रतिदिन इकाइयों का चुनाव लम्बे समय तक किया जाता है।

(2) उपकल्पनाओं का स्त्रोत-व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में प्रतिनिधि इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के बाद साधारणीकरण किया जाता है अर्थात् निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इन्हीं निष्कर्षों के आधार पर नई उपकल्पनाओं का जन्म होता है।

(3) विशिष्ट पहलुओं का अध्ययन-इसमें प्रतिनिधि इकाइयों का गहन अध्ययन किया जाता है इकाइयों के अनेक पहलू होते हैं; जैसे-पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि। व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में इकाइयों के विशिष्ट पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

(4) **महत्वपूर्ण प्रलेखों का साघन**-यह एक ऐसी पद्धति है जो महत्वपूर्ण प्रलेखों का निर्माण करने में सहायता करती है। इसलिए कहा जाता है कि व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति महत्वपूर्ण प्रलेखों का साधन है।

(5) **इकाइयों का वर्गीकरण**-इस पद्धति के द्वारा प्रत्येक इकाई के अलग-अलग गुणों का अध्ययन किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि विभिन्न प्रकार की इकाइयों को अलग वर्गों में बाँटने में सहायता मिलती है।

(6) **विरोधी इकाइयों का ज्ञान**-कुछ इकाइयाँ ऐसी होती है जो उपकल्पना के विपरीत होती हैं। इस प्रकार हम इन इकाइयों से सतर्क हो जाते हैं और जो भी निष्कर्ष निकालते हैं, वे उपकल्पना के विपरीत नहीं होते हैं।

(7) **अध्ययन की समस्त विधियों का प्रयोग-** व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में इकाइयों के सभी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। ये पहलू इतने विविध होते हैं कि इनका अध्ययन करने के लिए विविध प्रकार की विधियों को अपनाया जाता है। इसलिए मनुष्य के ज्ञान और अनुभव के क्षेत्र में वृद्धि होती है।

(8) **व्यक्तित्व का अध्ययन-** व्यक्तित्व ही मनुष्य में सब कुछ होता है और इसी का अध्ययन व्यक्ति का सबसे बड़ा अध्ययन है। व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है।

(9) **अनुभवों का विस्तृत क्षेत्र**-इस पद्धति के द्वारा समस्या का गहराई से अध्ययन किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि अनुसंधानकर्ता के अनुभवों में वृद्धि हो जाती है।

(10) **सांख्यिकीय अध्ययन-** व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति सांख्यिकीय अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इस पद्धति में पहले व्यक्तिगत आधार पर अध्ययन किया जाता है और इसके माध्यम से भविष्य में सांख्यिकीय अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है।

(11) **सामग्री की सम्पूर्णता-** किसी भी प्रकार की अध्ययन की मौलिक विशेषता उसके द्वारा प्राप्त सामग्री की सम्पूर्णता में है। अन्य विधियों से जो सामग्री संकलित की जाती है, उसमें पूर्णता का अभाव होता है। व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति से जो सामग्री संकलित की जाती है, वह पूर्ण होती है।

(12) **जीवन के प्रभावक कारकों का अध्ययन**-मानव जीवन को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं। व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति में उन प्रभावशाली कारकों का अध्ययन किया जाता है, जो जीवन को प्रभावित करते हैं।

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-7951

(13) व्यक्ति के बारे में ज्ञान- व्यक्ति का जीवन अत्यन्त जटिल है। इसे आसानी से नहीं समझा जा सकता है। व्यक्ति की जीवन धारणाओं और मूल्यों में भिन्नता होती है। इस प्रकार व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति महत्वपूर्ण है।

(14) ऐतिहासिक ज्ञान- व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति ऐतिहासिक स्थितियों की तस्वीर को स्पष्ट करती है. जिससे हमें भूतकालीन जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

(15) परिवर्तन का ज्ञान-समाज परिवर्तनशील है। इसमें उतार-चढ़ाव आते हैं। इस पद्धति में भूत और वर्तमान का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति के माध्यम से हमें समाज में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है।

(16) सामान्यीकरण का आधार- इस पद्धति के द्वारा विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों और व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इससे सामान्यीकरण के लिए आधार प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है।

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति की विशेषताएँ (Characteristics of Case Study)-वैयक्तिक अध्ययन पद्धति की प्रमुख निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है-

1. गुणात्मक अध्ययन-इस पद्धति के द्वारा सामाजिक घटना का गुणात्मक अध्ययन किया जाता है न कि परिमाणात्मक या संख्यात्मक। निष्कर्षों का आधार संख्याएँ नहीं होतीं, बल्कि सामाजिक घटना का गहन अवलोकन होता है। इस पद्धति में अध्ययन की इकाई का वर्णात्मक रूप में जीवन इतिहास प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें अतीत की दशाओं को वर्तमान से सम्बद्ध किया जाता है। इस प्रकार, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति गहन अवलोकन के आधार पर घटना का प्राकृतिक इतिहास प्रस्तुत करती है।

2. समस्या का गहन अध्ययन-इस पद्धति की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अध्ययन की इकाई के बारे में सब कुछ जानने का प्रयास करती है, न कि उसके किसी पक्ष के बारे में। इसलिए वैयक्तिक पद्धति दीर्घकालीन अध्ययन होते हैं। इसलिए बर्गेस ने इसे सामाजिक सूक्ष्म अध्ययन कहा है। अध्ययनकर्ता सामाजिक घटना में अपने अवलोकन के द्वारा अन्दर तक प्रविष्ट होने की चेष्टा करता है।

3. वैयक्तिक अध्ययन-यह अध्ययन व्यक्तिगत होते हैं तथा बहुत अधिक प्रणालीबद्ध नहीं होते। इस प्रकार के अध्ययन अधिकांशतः एकाकी अध्ययनकर्ता के द्वारा किये जाते हैं।

4. सम्पूर्ण अध्ययन-वैयक्तिक अध्ययन इकाई की सम्पूर्णता का अध्ययन है। इसकी सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता अध्ययन की इकाई की समग्रता को बनाये रखते हुए उसका सम्पूर्ण अध्ययन करना है।

केस अध्ययन विधि के लाभ एवं दोष-केस अध्ययन विधि का प्रयोग मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में काफी किया गया है। इस विधि के कुछ लाभ तथा इसमें कुछ खामियों भी पायी गई है।

इस विधि के प्रमुख लाभ निम्नांकित हैं-

अ. केस अध्ययन विधि में दो विभिन्न केसेज को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

आ. केस अध्ययन विधि द्वारा अध्ययन के लिए चयन किये गए केस का गहन रूप से अध्ययन सम्भव है क्योंकि इसमें एक समय में किसी एक केस या सामाजिक इकाई का ही अध्ययन किया जा सकता है।

इ. केस अध्ययन विधि द्वारा किसी प्राक्कल्पना के निर्माण में काफी मदद मिलती है।

ई. केस अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिससे प्राप्त तथ्यों के आधार पर भविष्य में किये जाने वाले अध्ययनों में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को पहले से ही आँका जा सकता है तथा उसे दूर करने के उपायों का वर्णन किया जा सकता है।

उ. इस विधि में चूँकि सामाजिक इकाई का गहन अध्ययन किया जाता है. इसलिए इसमें सम्बन्धित इकाई के व्यवहारिक पैटर्न को पूर्णरूप से समझने में मदद मिलता है।

ऊ. यह विधि सामाजिक इकाई के स्वाभाविक इतिहास के बारे में जानने में मदद करने के साथ-ही-साथ उसका सम्बन्ध वातावरण के अन्य सामाजिक कारकों से भी स्थापित करने में मदद करता है।

ऋ. कैस अध्ययन विधि में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सम्बन्धित कार्य के लिए प्रश्नावली या अनुसूची बनाने में मदद मिलती है।

इन लाभों के बावजूद केस अध्ययन विधि में कुछ खामियों भी हैं जो निम्नांकित हैं-

अ. केस अध्ययन विधि में आत्मनिष्ठता अधिक पाई जाती है जिसका प्रतिकूल प्रभाव अध्ययन के निष्कर्ष पर पड़ता है। इस विधि में शोधकर्ता तथा अध्ययन के लिए चुने गए सामाजिक इकाई में अधिक घनिष्ठता तथा सौहार्द्र स्थापित हो जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि शोधकर्ता सामाजिक इकाई से प्राप्त तथ्य का सही-सही वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन नहीं कर पाता है।

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-7951

आ. केस अध्ययन विधि में शोधकर्ता में निश्चितता का मिथ्या भाव उत्पन्न हो जाता है। शोधकर्ता अपने निष्कर्ष के बारे में इतना विश्वस्त हो जाता है कि वह अपने अध्ययन में सम्मिलित केसेज को प्रतिनिधि मानकर एक खास तरह के परिणाम के बारे में पूर्णतः निश्चित हो जाता है। इस तरह की निश्चिंतता का कुप्रभाव ग्रह होता है कि शोधकर्तता शोध डिजाइन के मूलतभूत नियमों को पूर्णतः उपेक्षा कर बैठता है।

इ. केस अध्ययन विधि में शोधकर्तता पर पूर्ण जवाबदेही इस बात की भी दी जाती है कि वह किसी सामाजिक इकाई जैसे व्यक्ति या परिवार के इतिहास तैयार करे। ऐसा करने के लिए यह काफी प्रयास कर सामाजिक इकाई के बारे में बहुत सारे सूचनाओं की तैयारी करता है तथा उनका विश्लेषण करता है। उनके द्वारा दी गयी सूचनाओं की वैधता की जाँच करने का कोई तरीका इस विधि में नहीं बतलाया गया है। वह जो कुछ भी सूचना प्रदान करता है, उसे सही मान लेने के अलावा कोई रास्ता नहीं रहता है। अतः आलोचकों ने केस अध्ययन विधि को एक पूर्ण वैज्ञानिक विधि नहीं माना है।

ई. केस अध्ययन विधि द्वारा अध्ययन में समय काफी लगता है। शोधकर्ता को प्रत्येक केस के बारे में विस्तृत रूप से सूचनाएँ तैयार करना होता है। सच पूछा जाए तो शोधकर्ता को केस के सभी पहलुओं अर्थात् भूत, वर्तमान तथा भविष्य को ध्यान में रखते हुए उनका इतिहास तैयार करना होता है. इसलिए यह काफी समय लेने वाली विधि होती है। साथ-ही-साथ यह विधि एक खर्चीली विधि भी है क्योंकि इसमें धन की बर्बादी भी कम नहीं होती है।

उ. केस अध्ययन विधि में चूँकि शोधकर्ता व्यक्ति से उनके गत अनुभूतियों एवं घटनाओं के बारे में पूछकर एक इतिहास तैयार करता है (जिसका बाद में विश्लेषण कर कोई निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है) अतः इस बात की सम्भावना काफी अधिक बनी हुई रहती है कि व्यक्ति अपनी गत अनुभूतियों का विशेषकर उन अनुभूतियों का जो काफी समय पहले घटित घटनाओं पर आधारित है, ठीक-ठीक बतला न पाये। ऐसी परिस्थिति में इस विधि द्वारा प्राप्त सूचनाएँ बहुत अर्थपूर्ण नहीं रह जाती।

ऊ. केस अध्ययन विधि में शोधकर्ता किसी एक केस का अध्ययन कर निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच जाना चाहता है। अक्सर देखा गया है कि मात्र किसी एक केस के अध्ययन के आधार पर लिया गया निष्कर्ष सही नहीं होता है। अगर वह निष्कर्ष सम्बन्धित केस के लिए सही भी हो जाए तो

इस बात की कोई गारंटी नहीं रहती कि उसे अन्य समान व्यक्तियों या सामाजिक इकाइयों के लिए भी सही माना जा सकता है।

ऋ. केस अध्ययन कई पूर्वकल्पनाओं पर आधारित होते हैं जो कभी-कभी वास्तविकता की कसौटी पर सही नहीं उतरते हैं। परिणामस्वरूप केस अध्ययन विधि से प्राप्त आँकड़े हमेशा शक के घेरे में होते हैं।

संन्दर्भ

१. सिंह डॉ० अमृता, डॉ० मधुलिका, "अनुसन्धान पद्धति एवं लैंगिक विकास ठाकुर पब्लिकेशन प्रा० लि० लखनऊ, आई० एस० बी० एन० न0.978-93-6180-458-8 प्रथम संस्करण 2024 पृ०सं० 96-97.

२. बघेल डॉ० डी० एस० शोध पद्धतिय एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन पृ०सं० 184-185.

३. अग्रलवाल डॉ० गोपाल कृष्ण "समाज विज्ञानों में अनुसन्धान की विधियों" एस०बी०पी०डी० पब्लिशिंग हाउस पृ०सं० 180-184.

४. मुखर्जी डॉ० रवीन्द्रनाथ, अग्रवाल डॉ० भारत, चौहान डॉ० करन सिंह, सामाजिक विज्ञान में शोध पद्धतियां "एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स' पृ०सं० 56-57.

५. शर्मा डॉ० आर० ए०, 'शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर लाल युक डिपो पृ०सं० 351-353.

६. त्रिपाठी अखिलेश मणि, "मनोविज्ञान दैनिका पब्लिशिंग कम्पनी पृ०सं० 330.

७. बघेल डॉ० डी० एस० "शोध पद्धतिय एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन पृ० सं० 186-187.

८. शर्मा डॉ० नमिता, शर्मा पल्लवी, "शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण" राजीव बंसलस एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन्स, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, पृ०सं० 02.

९. सिंह अरूण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियों, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर प्रा० लि० पृ०सं० 186-187.